REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

सल्तनत कालीन कुतबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी के शासन काल में असीदुद्दीन, हिसामुद्दीन एवम् मलिक यकलखी के विद्रोहः एक संक्षिप्त अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन,
सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़ गुरूहरसहाय, फिरोजपुर (पंजाब)

सारांश

कुतबुद्दीन मुबारक शाह जब सुल्तान बना तब वह 17–18 वर्षीय नवयुवक था इतने विशाल साम्राज्य का सर्वे सर्वा बनने के पश्चात उसने प्रशासनिक ढांचे को सुसंगठित करने का प्रयास नहीं किया। उत्तर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम तक के विशाल साम्राज्य को संभालने के लिये अनुभवी राज्यपालों की नियुक्ति आवश्यक थी, परन्तु दासों पर अत्यधिक निर्भरता व आवश्यकता से अधिक विश्वास के कारण लगातार विद्रोहों ने शासन व्यवस्था पर उसकी ढ़ीली पकड़ को रेखांकित किया।

प्रस्तावना

सन् 1318 ई0 में सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह ने देवगिरि में हरपाल देव को दण्डित करने के पश्चात् एक अलाई दास मलिक यकलकी खॉ को वहॉ का राज्यपाल नियुक्त किया और अपने प्रिय दास खुसरो को एक बड़ी सेना का अध्यक्ष नियुक्त करके दक्षिण के अन्य राज्यों को विजित करने के लिये भेजा।[1] बरसात आरम्भ होने के कारण सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह को दो माह के लिये देवगिरि में रूकना पड़ा। सितम्बर 1318 ई0 तक[2] बरसात समाप्त हुई। इसी समय सुल्तान ने मदिरापान एवं भोग–विलास करते हुये देहली की ओर प्रस्थान किया।

असीदुद्दीन का विद्रोह

मृत सुल्तान अलाउद्दीन के चाचा मलिक खामोश योग्रेश खॉ के पुत्र असीदुद्दीन ने एक षडयंत्र द्वारा सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह की हत्या की योजना बनायी।[3] इस विद्रोह के वह सभी साधारण कारण तो थे ही जो कि प्रत्येक विद्रोह में होते हैं तथा निम्न मुख्य कारण और दृष्टिगोचर होते हैं–

- ❖ असीदुद्दीन बड़ा वीर एवं साहसी था उसने देखा कि सुल्तान भोग–विलास में लीन रहता है तथा अपनी सुरक्षा के प्रति भी चिन्तित नहीं है।
- ❖ सुल्तान ने अपने कृपापात्रों को हाल में ही उच्च एवं सम्मानपूर्ण पद प्रदान किये थे जिससे कुछ वरिष्ठ अमीर नाराज हो गये और वह असीदुद्दीन के साथ आ गये।[4]
- ❖ सुल्तान स्वयं सुखापभोग एवं अनैतिक कार्यों में व्यस्त रहता था तथा जनसाधारण भी उसी का अनुशरण कर रहे थे इससे जनता के हृदय में भी सुल्तान के प्रति सम्मान का भाव एवं राजत्व का डर नहीं था।
- ❖ कुतबुद्दीन मुबारक शाह हर समय नशे में चूर रहता था तथा नशे की हालत में हत्या करना आसान था।

इन सभी कारणों से प्रभावित होकर असीदुद्दीन की योजना थी, कि देवगिरि से देहली आने वाले मार्ग के बीच में सागौर की घाटी पर काफिले में स्त्रियों के बीच घुसकर सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह की हत्या कर दी जाये। क्योंकि वह जानता था कि कुतबुद्दीन नशे की हालत में होगा और उस हालत में उसकी हत्या में कोई कठिनाई नहीं आयेगी।[5] सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह की मृत्यु अभी नहीं आयी थी इसलिये विद्रोह का खुलासा हो गया। जैसा कि प्रत्येक विद्रोह के समय होता है, अगर विद्रोह का पूर्व ही पता चल गया तो विद्रोह का खुलासा करने वाला, षडयंत्रकारियों में से ही एक होता है।

जब कुतबुद्दीन मुबारक शाह को इतने भयकर विद्रोह का ज्ञान हुआ तो उसने शीघ्र ही शाही सेना को रूकने और विद्रोहियों को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। असीदुद्दीन एवं उसके विद्रोही साथी बताये गये निश्चित स्थान पर ही मिले। रातोंरात उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें कठोरता के साथ अपराध स्वीकार करने के लिये विवश किया गया तत्पश्चात् सुबह शाही मंच के निकट इन सभी विद्रोहियों की हत्या कर दी गयी और देहली की ओर प्रस्थान किया। कुतबुद्दीन मुबारक शाह मार्ग में एक दिन से अधिक कहीं न रूका क्योंकि वह शीघ्रता से देहली पहुॅचना चाहता था।[6]

देहली पहुॅचकर मुबारक शाह ने असीदुद्दीन के समस्त परिवार को जान से मारने का आदेश दिया। उसके परिवार के 29 छोटे–बड़े पुरूषों का वध कर दिया गया। जिन सदस्यों को इस विद्रोह का ज्ञान भी न था वह भी नहीं बख्से गये। उनकी पूर्ण धन सम्पत्ति जब्त कर ली गयी। महिलाओं और लड़कियों को दर–दर की ठोकरें खाने को विवश कर दिया।[7] सुल्तान इस विद्रोह से इतना उत्तेजित हो गया कि उसने शाही परिवार के उन सभी सदस्यों की हत्या करवा दी जो कि सुल्तान पद के लिए सम्भावित दावेदार हो सकते थे। उसने इस क्रम में खिज्र खॉ, शादी खॉ, शिहाबुद्दीन उमर एवं अन्य बंदी राजकुमारों की हत्या करा दी।[8]

कुतबुद्दीन मुबारक शाह ने इस विद्रोह से न कोई शिक्षा ग्रहण की और न ही अपनी सुरक्षा के लिये विशेष कदम उठाये। वह हमेशा की तरह नशे में चूर एवं असावधान रहा। सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह ने असीदुद्दीन को विद्रोह से पूर्व ही कैद करवाकर मौत के घाट उतार दिया इस प्रकार सुल्तान ने विद्रोहियों को दण्ड देकर अन्य विद्रोहियों को सचेत कर दिया। असीदुद्दीन का सम्पूर्ण परिवार नष्ट करके जनता को यह सन्देश दिया कि उदार हृदय में कितना क्रूरतम् व्यक्तित्व छिपा हुआ है। शाही परिवार के प्रत्येक व्यक्ति की हत्या के परिणामतः आगामी वर्षों में खिलजी वंश के व्यक्ति के अभाव में एक नये राजवंश की नीव पड़ी।

हिसामुद्दीन का विद्रोह

कुतबुद्दीन मुबारक शाह के सिंहासन पर बैठने के पश्चात् गुजरात में विद्रोह का दमन कर दिया गया तथा वहॉ पर सुल्तान ने अपने श्वसुर मलिक दीनार को जिसे जफर खॉ की उपाधि प्रदान की गयी थी, उसे वहॉ का राज्यपाल नियुक्त कर दिया। जफर खॉ के योग्य प्रशासन से गुजरात प्रान्त फिर से खुशहाल एवं समृद्ध हो गया।[9] किन्तु जफर खॉ की निष्ठा पर सन्देह करने के कारण, क्योकि देवगिरि से लौटते समय वह अपने परिवारिजनों द्वारा रचे गये हत्या के षडयंत्र से अत्यधिक उत्तेजित हो गया था। इससे उसने जफर खॉ की अकारण हत्या[10] करवा दी।

गुजरात में जफर खॉ की हत्या के पश्चात् सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह ने खुसरों खॉ के भाई हिसामुद्दीन[11] को गुजरात का राज्यपाल नियुक्त किया। कुतबुद्दीन मुबारक शाह, खुसरों खॉ की तरह इस पर भी आसक्त रहता था तथा इसका बहुत प्रिय था।

हिसामुद्दीन ने गुजरात पहुॅचकर अपने सम्बन्धियों एवं रिश्तेदारों को एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया और शक्ति में बढ़ोत्तरी करने लगा। कुछ समय बाद इसने गुजरात में विद्रोह का झण्ड़ा खड़ा कर दिया।[12] इसके निम्न कारण थे–

- ❖ सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह द्वारा एक निम्न श्रेणी के व्यक्ति को इतना उच्च पद प्रदान करने से इसका दिमाग फिर गया और इसकी महत्वाकांक्षायें अत्यधिक उत्तेजित हो गयी।
- ❖ गुजरात में हिसामुद्दीन के सम्बन्धी जो वहॉ पर पर्याप्त प्रभावशाली थे इसे उनका पूर्ण समर्थन मिल गया।
- ❖ खुसरो खॉ एवं हिसामुद्दीन दोनों ही सुल्तान मुबारक शाह से मुक्त होना चाहते थे। क्योंकि यह जो घृणित कार्य इनके साथ करता था वह इससे लज्जाजनक परिस्थितियों का अनुभव करते थे।[13]

❖ हिसामुद्दीन यह भी जानता था कि विद्रोह असफल होने पर उसका भाई खुसरो उसको बचा लेगा क्योंकि सुल्तान पूर्ण रूप से उसके ऊपर आसक्त है।

इन सभी कारणों से प्रभावित होकर मलिक खुसरो के भाई हिसामुद्दीन ने गुजरात में विद्रोह की योजना बनाकर उसे क्रियान्वित करना प्रारम्भ किया। उस समय गुजरात के अमीर बहुत शक्तिशाली थे तथा वह बार–बार के विद्रोहों से तंग आ चुके थे। उन्होंने अपनी शक्ति द्वारा विद्रोह का सरलता से दमन कर दिया और हिसामुद्दीन को बन्दी बनाकर सुल्तान के पास देहली भेज दिया। जब सुल्तान मुबारक शाह को उसके विद्रोह का ज्ञान हुआ तो उसने उस पर क्रोधित होते हुये केवल एक थप्पड़ मारा। क्योंकि सुल्तान मलिक खुसरो के वश में था इसीलिये उसके विरूद्ध कोई कठिन कार्यवाही नहीं की गयी। सुल्तान ने उसे मुक्त करने का आदेश दिया और इसे अपना विश्वासपात्र बनाकर दरवार में एक उच्च पद प्रदान किया। जब गुजरात में अमीरों ने विद्रोही हिसामुद्दीन के मुक्त एवं उच्च पद प्राप्त होने का समाचार सुना तो वे बड़े भयभीत हुए और वह सुल्तान की इस कार्यवाही से नाराज एवं उससे घृणा करने लगे।[14]

हिसामुद्दीन को दण्डित न करके कुतबुद्दीन ने भारी भूल की इसी के कारण आगामी षणयन्त्रों को शह प्राप्त हुयी और सुल्तान ने अपनी कमजोरी इन बरवारियों के समक्ष प्रकट कर दी। कुतबुद्दीन को हिसामुद्दीन एवम् उसके सहयोगियों को कठोरता के साथ दण्डित करना चाहिये था, जिससे अन्य विद्रोही भी शिक्षा ग्रहण कर सकें। आगामी वर्षो में इन्ही बरवारों ने खुसरों खॉ के अन्तर्गत इतनी अधिक शक्ति अर्जित कर ली कि वह खिलजी साम्राज्य का अंत करके एक नवीन राजवंश की स्थापना में सफल रहे। हिसामुद्दीन को दण्डित न करके राजभक्तों के ह्रदय में एक भय उत्पन्न हो गया, क्योंकि सुल्तान इन बारवरों के पूर्ण प्रमुत्व में आ चुका था तथा अन्य खिलजी अमीरों को इनसे स्पष्टतः खतरा नजर आने लगा।

हिसामुद्दीन के पश्चात् गुजरात की सुव्यवस्था के लिये जिस व्यक्ति को चुना, वास्तव में उसके चुनाव में मुबारक शाह ने अपनी योग्यता का परिचय दिया। यह व्यक्ति अत्यंत निपुण एवं कुशल प्रशासक वहाउद्दीन कुरैशी था जिसने आगामी वर्षों में वहॉ शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित की।

देवगिरि में मलिक यकलखी का विद्रोह

सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह ने देवगिरि में हरपाल देव को दण्डित करने के पश्चात् वहॉ पर शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित की। अक्टूबर 1318 ई0 में देवगिरि से देहली प्रस्थान करने से पूर्व सुव्यवस्था एवं उचित प्रबन्ध के उद्देश्य से मलिक यकलखी को वहॉ का राज्यपाल नियुक्त किया। यह एक अलाई दास था तथा देवगिरि में राज्यपाल की नियुक्ति से पूर्व "बरीदे ममालिक" (गुप्तचर विभाग का सबसे बड़ा अफसर) पद पर रहते हुए, इसने कुशलतापूर्वक अपने दायित्वों को निर्वाह किया था।[15]

कुतबुद्दीन मुबारक शाह ने इसे देवगिरि का राज्यपाल नियुक्त करने से पूर्व, इसकी कार्य कुशलता एवं लगन को देखकर ही नियुक्त किया था। किन्तु इसने, जिस समय कुतबुद्दीन मुबारक शाह ने हिसामुद्दीन के विद्रोह के कारण उसके स्थान पर बहाउद्दीन कुरैशी को गुजरात में राज्यपाल नियुक्त किया था[16] लगभग उसी समय देवगिरि में विद्रोह कर दिया। मलिक यकलखी के विद्रोह में निम्न परिस्थितियों का योगदान मुख्य रहा–

❖ देवगिरि राजधानी देहली से बहुत दूर स्थिति थी। राजधानी और देवगिरि की इस दूरी ने भी इसकी सुप्त महत्वाकांक्षाओं को जाग्रत कर दिया।

❖ यह एक निम्न श्रेणी के अलाई दास से उन्नति करता हुआ उच्च श्रेणी के पद, देवगिरि का राज्यपाल नियुक्त हुआ था।

❖ यह सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारकशाह के भोग विलास, मदिरा पान एवं उसकी आलसी प्रवृत्ति को जानता था तथा सेना को अपने पक्ष में समझकर अपने को शक्तिशाली समझ रहा था।

इस प्रकार इन सभी परिस्थतियों ने उसे ऐसी भयंकर उद्दण्डता करने के लिये प्रेरित किया। अतः इसने स्वयं की सत्ता स्थापित एवं शम्सुद्दीन की उपाधि धारण कर ली और अपने नाम के सिक्के चलाये।[17] सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह को एक दूत द्वारा मलिक यकलखी खॉ की इस घृणित कार्यवाही का ज्ञान हुआ तो उसने शीघ्र ही एक शाही सेना यागदा के पुत्र तलबगा, शादी सतीला, कुतलुग अमीर–ए–शिकार, मलिक ताजुलमुल्क एवं ख्वाजा हाजी के अन्तर्गत भेजी।[18]

शाही सेना के आगमन का समाचार सुनकर भी यकलखी युद्ध की तैयारी के स्थान पर मद्यपान एवं संगीत संध्या में मस्त रहा। यह अत्यन्त अभिमानी प्रवृति का व्यक्ति था। यह समझ रहा था कि सेना इसके प्रति निष्ठावान है तथा सभी वरिष्ठ अधिकारी उसके प्रति वफादार हैं किन्तु इसके विपरीत सैनिक एवं अधिकारी इसके विरूद्ध षडयंत्र रचने में लगे हुये थे। एक दिन इमरान नामक एक सैनिक अधिकारी ने नशे में चूर मलिक यकलखी एवं उसके समर्थकों को गिरफ्तार कर लिया और शाही सेना के अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत किया। शाही सेना ने देवगिरि में प्रवेश करके विद्रोही यकलखी का साथ देने वालों को भी गिरफ्तार करके यकलखी के साथ सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक के पास देहली भेज दिया।[19]

देहली में मलिक यकलखी को सुल्तान के समक्ष पेश किया गया। सुल्तान ने इसको विशेष रूप से अपमानित करने के लिये इसके नाक, कान कटवा दिये। यह दण्ड अन्य दण्डों से अधिक प्रभवशाली था तथा अन्य विद्रोहियों को मौत के घाट उतार दिया गया।[20] मलिक यकलखी बाद में सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह का बड़ा विश्वस्त अमीर बना और इसे सामाना का राज्यपाल नियुक्त किया।[21] मलिक यकलखी के सहयोगियों का जितनी कठोरता के साथ कुतबुद्दीन ने दमन किया यह एक बार फिर उदाहरण बनकर अन्य विद्रोह करने वालों के लिये सबक था।

देवगिरि का शासन प्रबन्ध कुशलता से संचालन करने के लिये मलिक एनुलमुल्क मुल्तानी को राज्यपाल नियुक्त किया गया। देवगिरि के "इशरफ" (राजस्व और लेखा) का पद आला दबीर के पुत्र मलिक ताजुमुल्क को प्रदान किया और मुजीरूद्दीन अबू रजा को उपराज्यपाल के पद पर नियुक्त किया। लोगों को देखकर आश्चर्य हुआ कि मुबारक शाह ने इतनी उत्तम नियुक्तियॉ की हैं। इन अधिकारियों ने देवगिरि पहुॅचर उसे शीघ्र ही सुव्यवस्थित कर दिया।[22]

अंततः इन तीनों विद्रोहों के सम्बंध में कहा जा सकता है कि यह विद्रोह कुतबुद्दीन मुबारक खिलजी की अपरिपक्वता, अनुभवहीनता, प्रशासनिक अक्षमता के परिचायक थे। क्योंकि बहुत ही कम उम्र में सुल्तान बनने से वह मदिरापान, भोग विलास व अनैतिक कृत्यों में अत्याधिक व्यस्त रहता था इससे वह दिल्ली सल्तनत की प्रतिष्ठा व चमक गवॉ बैठा था।

संन्दर्भ–

1. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 390।
   फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, पृ0 360–61।
2. खिलजी वंश का इतिहास : डॉ के0एस0 लाल, पृ0 231।
3. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 392।
4. खिलजी वंश का इतिहास : डॉ के0एस0 लाल, पृ0 231।
5. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 392।
6. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, पृ0 364।
   तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 393।
7. वही, पृ0 393।
8. वही, पृ0 393।
9. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 388।
10. वही, पृ0 395।
11. जियाउद्दीन बरनी पृ0 396 पर **"खुसरो खॉ की माता का भाई"** लिखता है तथा आगे के पृष्ठों पर खुसरों खॉ का यह भाई लिखा है। अतः यह निश्चित नहीं है कि यह खुसरों खॉ का सगा भाई था या सौतेला भाई।
12. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 397।
13. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 391, 396।
14. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 396।
15. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 390।
16. वही, पृ0 393।
17. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, पृ0 366।

डॉ0 के0एस0 लाल ने "खिलजी वंश का इतिहास" पृ0 322 में दो सोने के सिक्कों का उल्लेख किया है जो 718 हिजरी में "शम्सुद्दीन महमूद शाह" के नाम से ढाले गये थे सम्भवतः यह यकलखी खॉ के सिक्के हैं।

18. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, पृ0 366–67।
19. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, पृ0 368।
20. वही, पृ0 368।
21. तुगलकनामा : अमीर खुसरो, पृ0 56–57।
22. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 398।

संन्दर्भ ग्रथ सूची–

1. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, अनुवाद डॉ सैयद अतहर अब्बास रिजवी।
2. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, अनु0 आगा मेंहदी हुसेन, आगरा, 1938।
3. तारीखे मुबारकशाही : याहिया सरहिन्दी, अनु0 के0के0 बसु।
4. तुगलक नामा : अमीर खुसरो।
5. हिस्ट्री ऑफ डैकिन : जे0डी0बी0 ग्रिबिल, लन्दन, 1898।
6. क्राम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया : सर बुल्जले हेग, तृतीय खण्ड, 1928।
7. साउथ इण्डिया एण्ड हर मौहमडन इनवेडर्स : के0एम0 अशरफ, लन्दन, 1921।
8. ए हिस्ट्री ऑफ दी राइज ऑफ दी मौहमडन पावर : जान ब्रिग्स, कलकत्ता, 1910।
9. हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एज टोल्ड बाई इटस ओन हिस्टोरियंश : इलियट एण्ड डाउसन, लन्दन, 1987।
10. दि फाउण्डेशन ऑफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया : ए0बी0एम0 हबीबुल्लाह, लाहौर, 1945।
11. स्टडीज इन इण्डों मुस्लिम हिस्ट्री : एस0एच0 होड़ीवाल, बम्बई 1943।
12. दि मौहमडन डायनेस्टीज : एस0 लेनपूल, पेरिस, 1925।
13. मैडीवल इण्डिया : एस0सी0रे0, कलकत्ता 1931।
14. एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द सल्तनत ऑफ देहली : आई0एच0 कुरैशी, लाहौर 1942।
15. दि सुल्तान ऑफ देहली : नेल्सन राइट, देहली, 1939।
16. मध्यकालीन भारत की सामाजिक दशा : युसुफ अली।
17. भारत का इतिहास : डा0 ए0एल0 श्रीवास्तव।
18. खिलजी कालीन भारत : डॉ0 सै0 अतहर अब्बास रिजवी।
19. खिलजी वंश का इतिहास : डॉ0 के0एस0 लाल, विश्व प्रकाशन नई दिल्ली, 1993।
20. दिल्ली सल्तनत : मौ0 हबीब एवं खलीक अहमद निजामी।
21. भारत का इतिहास : प्रो0 रोमिला थापर।
22. भारतीय मुसलमानों का राजनीतिक इतिहास : रामगोपाल।
    आदि तुर्क कालीन भारत : सै0 अ0अ0 रिजवी।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन, सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़ गुरूहरसहाय, फिरोजपुर (पंजाब)